❑कविता

भासा सूं अरदास / ओळबौ

चंद्रप्रकाश देवल

कवि परिचै

आधुनिक राजस्थानी कविता रा ख्यातनांव कवि चंद्रप्रकाश देवल रौ जलम 14 अगस्त, 1949 नै उदयपुर जिलै रै गोटीपा गांव में होयौ। टाबरपणै सूं ई सिरजण में आपरी रुचि रैयी। 'पागी', 'कावड़', 'मारग', 'तोपनामा', 'राग-विजोग', 'झुरावौ', 'उडीक पुरांण' अर 'तीजौ अयन' आपरा चरचित कविता-संग्रै है। कविता रचण रै सागै आपरौ संपादन-कौसल ई सरावण जोग है। श्री देवल 'वंश भास्कर' रौ नौ भागां में बेजोड़ संपादन कर्‌यौ। फ्योदोर दोस्तोयेवस्की रै उपन्यास 'क्राइम एंड पनिशमेंट' अर सैम्युअल बैकेट रै नाटक 'वेटिंग फोर गोडो', कविता पोथ्यां 'अकाल में सारस' (हिंदी) 'जटायु' (गुजराती), 'कहीं नहीं वहीं' (हिन्दी), 'शब्देर आकाश' अर 'श्री राधा' (उड़िया), 'न धुप्पे ना छांवै' (पंजाबी), 'जाते दुरई जाई' (बांग्ला) समेत केई पोथ्यां रौ राजस्थानी में उल्थौ कर्‌यौ। आप साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली रै राजस्थानी परामर्श मंडळ रा संयोजक रैया।

कवि चंद्रप्रकाश देवल नैं भारत सरकार 'पद्मश्री' अलंकरण सूं सम्मानित कर्‌यौ। साहित्य अकादेमी, दिल्ली रौ 'राजस्थानी पुरस्कार' अर 'राजस्थानी अनुवाद पुरस्कार', राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर रौ 'मीरां पुरस्कार', राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर रौ 'सूर्यमल्ल मीसण शिखर पुरस्कार', राजस्थानी अकादमी, दिल्ली रौ 'लखोटिया पुरस्कार' अर के. के. बिड़ला फाउंडेशन रौ 'बिहारी पुरस्कार' ई आपनै मिळ्यौ।

पाठ परिचै

कवि चंद्रप्रकाश देवल री पोथी 'तोपनामा' मांय मिनख री आवगी जीवाजूण रौ म्यानौ परगळाई सूं निजर पसार देखीजै। नूंवी दीठ, नूंवी सोच, इधका बिंब साथै कैवण री कूंत साव निकेवळी लखावै। पोथी री सगळी कवितावां अेक सूं अेक सवाई अर अरथबोध में पूरसल संवेदना जगावण वाळी, भावां रा सागर में ऊंडै तळ तांई गोता लगावण वास्तै पाठकां नैं बांधण वाळी है। आं सजोरी कवितावां मांय सूं दो कवितावां इण पाठ में राखीजी है— *'भासा सूं अरदास'* अर *'ओळबौ'*।

आं दोनूं कवितावां रौ आधार अेक पण भाव न्यारा है। आखर रा रूप, भेद अर उणरै मांयली तासीर नैं समझण वाळा कवि चंद्रप्रकाश देवल लिखै कै केई आखर औगणगारा, केई बादीला, नखराळा, खुरदरा अर सुंवांळा होवै। केई आकरा तौ केई अंटाळा। आखरां में इत्तौ भेद! बात कैवण रौ आपौ-आपरौ न्यारौ-न्यारौ ढाळौ व्है सकै। कैवत है कै बोली में विस अर इमरत दोनूं व्है। आपरै वास्तै गुणचोर वाळा बोल औगणगारा, बात नीं मानण वाळा बादीला, जिणां में मान-मनवार, संयोग सिणगार रौ वरणाव व्है वै नखराळा अर वियोग सिणगार में पीड़ देवण वाळा कै चुभण वाळा बोल खुरदरा व्है सकै। मन नैं सुख अर संतोख देवण वाळी बातां रौ वरणाव सुवांळा आखरां में व्है सकै। करड़ौ साच, जिणमें रीस है, किणी रौ वाचौ या प्रण है, वै आकरा आखर हिया नैं बींधण वाळा, केई ताना वाळा डोढा बोल व्यंग्य बाण, जिकां नैं मिनख जीवै जठै लग नीं भूलै। कवि नैं आपरी भासा सूं हेत अर अपणास है, इण कारण वै

आं सगळा बोलां नैं आपरा अंतस में राख उणां रौ माण राखै। कवि आपरी भासा रा सगळा आखरां सूं झोळी भर भासा नैं सिमरथ करणी चावै। कवि रै अंतस में साचै अरथां में भासा री चीरफाड़ करनै मरम जाणण वाळौ अेक भासा वैग्यानिक बैठौ है, जिकौ रोहिड़ा रा फूलां में सुगंध भरण री खिमता राखै। सबदां रा कारीगर कवि गुणबायरा अर फिजूल सबदां नैं ई अरथवान बणावण री उडीक में है। आप भासा सूं अरदास करै कै दया करनै म्हारा अधूरा अंतस में वास तौ कर। बिना भासा रै मिनख जाणै आधौ अधूरौ है। भासा ऊंकार रौ रूप अर ऊंकार ब्रह्म है। ब्रह्म ई जीव है तौ भासा नैं अंगेजियां अर केवटियां इज मुगती है।

दूजी कविता *'ओळबौ'* में कवि आपरी पैलड़ी पीढी नैं ओळबौ देवै, जिकां मायड़ भासा री अंवेर नीं करी, उणरी रिछ्या नीं करी। कवि मुजब औ इज कारण रैयौ है कै मायड़ भासा री जिकी ठौड़ होवणी चाईजती, वा आज कोनी। कवि रा बोल काळजै लागै जैड़ा है। सांस अर बोली रौ गैरौ सगपण है। सांस रै साथै ई बोली रा बोल निकळै। मायड़ भासा नैं बोलतां जिण सुख रौ लखाव होवणौ चाईजै, उण ठौड़ अेक दुख होवै। मां रा परस सूं डील में गिलगिली अर हियौ हुलसै पण उणरी ठौड़ अेक सूळ चुभनै नासूर रौ रूप लेय लेवै— वा पीड़, वौ दरद सैन कोनी करीजै। कवि आपरी देह रै कजी लागण री बात करै कै रोग में टसकणौ अर पांगळौ व्हियां पछै ठिरड़ीजणौ तौ सोरौ पण बिना आपरा बोलां रै, भासा रै जीवणौ घणौ दोरौ। कवि कैवै कै म्हैं लाख कोसिस करूं, रोवूं-कळपूं पण उणां बडेरां नैं ओळबौ ई किणमें देवू, क्यूंकै म्हारै कनै उणां री भासा कोनी रैयी। बात कैवण री आंट कवि चंद्रप्रकाश देवल री काव्य-खिमता नैं दरसावै। बिना आपरी मायड़ भासा रै मिनख मेहण्यां देवै। उकळतौ तेल बाळै ज्यूं वै बोल काळजौ बाळै। पन्ना धाय वाळौ जमानौ अबै कोनी। दूजी भासा नैं जींवती राखण वास्तै, सिमरथ करण वास्तै म्हारी मायड़ भासा आपौ गमाय दियौ। आज आछां अर साचां रौ जमानौ कोनी। सामधरमियां री पूछ कोनी, भलौ करणवाळा मूरख गिणीजै। आपरी भासा नैं नूंवै सीगै सूं अंवेरण री खेचळ आं दोनूं कवितावां में सुभट निजर आवै। 'अरदास' अर 'ओळबौ' कैवण रा न्यारा रूप, पण जनमानस जिण रूप में समझ सकै, उणनैं आपरौ आपौ निजर आवैला। भासा जीवण रै वास्तै, विचारां रै प्रगटीजण वास्तै, खुद नैं खुद री ओळखाण करावण वास्तै कित्ती जरूरी है। उणरी रुखाळी कीकर व्है सकै? कवि री अरदास, भासा रै वास्तै आपरौ हेज अर मिटती भासा रै वास्तै जिकी पीड़ है वा हरेक मानवी री पीड़ होवणी चाईजै। मायड़ भासा बिना कैड़ी ओळखाण अर कैड़ौ जीवण? कवितावां री अेक-अेक ओळी मरम परसी है। वा ऊंडी पीड़ अंतस में चेतना जगावती दीखै।

भासा सूं अरदास

जाणूं घणौ ई म्हैं
व्है केई सबद
अणूता ओगणगारा
केई व्है वां सूं न्यारा
केई बादीला
केई नखराळा
केई खुरदरा
केई सुंवांळा
केई अणूता आकरा
हियौ तोड़ लै अैड़ा अंटाळा
म्हारी आंख्यां री सौगन

झेलूंला अेकूका नै आपरी पलकां री झोळी
जिणसूं अरथवांन व्है म्हारी बोली।
व्है केई गुणबायरा-फिजूल
रंग राता रोहिड़ा रा फूल
व्है तौ व्है अैड़ी तासीर वाळा
पण आवण रा मता सूं
अेकर म्हारी कांनी मूंडौ तौ करै!
उडीकतौ थारी दयावती
ऊभौ थारै कोळै
म्हारी भासा!
अेकर तौ रैवास कर
म्हारै ई अधवीठै अंतस
म्हैं पूरण व्है जावूं
मरयां मुगातर पावूं।

ओळबौ

म्हारी पांसळी
थारै हेज री सूळ खुबै, मां
अर गिलगिली री ठौड़
अेक पीळा जरद, दरद रौ पसराव
म्हैं परसेवै घांण।
बोलूं तौ किण आसरै
बडाउवां भासा गुमाय दी।
लेहणौ छोडग्या व्हैता तौ थुड़तौ दिन-रात
बणती आफळ उतार देवतौ
मांदौ छोडग्या व्हैता
तौ ई टसक-टसक जीव लेवतौ
छोड जावता पांगळौ
तौ ठिरड़ आपरौ गात, हर जठै पूग जावतौ।
कांन देय साबूत, बोल गुमायगा
दीसता-दासता फूठरा नै दागल कैवायग्या।
अबै वांनै डाडतौ
घणी ई आफळ करूं
पण ओळबौ नीं दिरीजै
आज चलण री भासा वै समझैला कोनी

अर म्हारै पाखती वांरी भासा रही कोनी।
मेहण्यां ई मेहण्यां सुणीजै
चारूं दिस
ताता तेल री छांट ज्यूं उफसावै काळजौ फाला।
आपरौ पूत मराय
जांणै धाय-मां जीवायौ परायौ वंस
अैड़ा जीव आज रै जमारै
लाख सांमखोर पण गिणीजै काला!
⌘⌘

अबखा सबदां रा अरथ

ओगणगारा =औगुणां वाळा, अवगुणां रा घर। क वरग, च वरग, ट वरग, त अर प वरग बिलटी रा आखरां रा मेळ सूं बोलीजै पण कहीजै वै स्पर्श आखर (स्वर रौ औगण) क्रतघन।

बादीला =आपरौ स्वभाव या बात नैं पकड़ण वाळा (जिद्दी)। वरण या आखरां रै उच्चारण री न्यारी-न्यारी ठौड़ है— कंठ दंती, ओष्ठ, तालव्य, मूर्धन्य, उच्चारण स्थान नीं बदळै, इण रूप में बादीला।

नखराळा =भाव-भंगिमा वाळा। हरेक वरग रा लारला तीन आखर (ग घ ड़....) अंतस्थ है, जिणमें उच्चारण री बगत झणकार होवै अर भाव-भंगिमा, हाव-भाव वाळा सबदां सूं ई मन री वीणा रा तार झणझणाट करै।

खुरदरा =दरदरा, कीं चुभणवाळा। श, ष, स, ह रै उच्चारण सूं कंठ में खाज-सी आवै, गुदगुदी होवै, इण रूप में खुरदरा आखर।

सुंवांळा =नरम, कंवळा, मनभावणा। हरेक वरग रा दूजा आखर रै सिवाय सारा आखर अंतस्थ अत्यप्राण है, जिण में मिनख री संचित ऊर्जा खरच नीं होवै अर्थात आराम देवण वाळा आखर।

आकरा =करड़ा, खारा। हरेक वरग रौ पैलौ-दूजौ आखर अर श, ष, ह अै अघोस या आकरा आखर गिणीजै, जिणां रै उच्चारण में खरखराट होवै।

अंटाळा =व्यंग्योक्ति वाळा या कैवण रै न्यारै ढंग ढाळै वाळा। अनुनासिक वरणां नैं अठै अंटाळा कैय सकां, जिणमें सांस नैं नाक सूं निकाळणी पड़ै। उच्चारण रै बगत आपरी न्यारी आंट वाळा।

रोहिड़ै रा फूल=रूपाळा पण गुणहीण, देखावू। तासीर=आदत, प्रवृत्ति। दयावती=करुणा, दया, मेहरबानी। कोळै ऊभौ=बारणै रै कंवळै कनै खड़्यौ। अधवींठै=अधूरौ, अपूरण। मुगातर=मुगती, मोक्ष। पांसळी=पसळियां। सूळ=कांटौ, बडौ कांटौ। पीळौ जरद= पीळौपट्ट, मवाद वाळौ नासूर, जूनौ घाव। परसेवै घांण=पीसना सूं लथपथ। बडाउवां=बडेरा, पूर्वज। गुमायदी=गवां दी, खोय दी। लेहणौ=करजौ। थुड़तौ=आफळतौ, कोसिस करतौ। ठिरड़तौ=घसीटतौ। गात=सरीर, डील। मांदौ=बिमार। पांगळौ=पगां सूं लाचार। दागल=दागदार, कळंकित। डाडतौ=जोर सूं रोवतौ, अरड़ावतौ। मेहण्यां=ताना, मेहणां। ओळबौ=सिकायत, उपालंभ। उफसावै=फुलावै। फाला=फोड़ा, पाणी सूं भरयोड़ौ दुखणियौ। धाय मां=मां टाळ दूध चूंघावण वाळी, पाळपोख करण वाळी। सांमखोर=स्वामिभक्त, देसभक्त।

सवाल

विकळपाऊ पडूत्तर वाळा सवाल

1. 'भासा सूं अरदास' कविता कवि चंद्रप्रकाश देवल री कविता-पोथी सूं लिरीजी है—

   (अ) पागी (ब) कावड़

   (स) तोपनामा (द) तीजौ अयन

   ( )

2. 'ओळबौ' कविता में कवि किणनैं ओळबौ दियौ है ?

   (अ) धाय-मां नैं (ब) भासा नैं

   (स) कविता नैं (द) बडेरां नैं

   ( )

3. चंद्रप्रकाश देवल नैं भारत सरकार सूं सम्मान मिळ्यौ—

   (अ) पद्म भूषण (ब) पद्मश्री

   (स) राजस्थान-रत्न (द) भारत-रत्न

   ( )

साव छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि चंद्रप्रकाश देवल रौ जलम कद अर कठै होयौ ?
2. चंद्रप्रकाश देवल री दोय पोथ्यां रा नांव लिखौ।
3. चंद्रप्रकाश देवल आपरी कविता में किणसूं अरदास करै अर क्यूं ?

छोटा पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि चंद्रप्रकाश देवल आपरी कविता में किण तरै रै सबदां री बात करै ?
2. चंद्रप्रकाश देवल किण-किण रचनावां रा राजस्थानी उल्था कर्‍या ? नांव लिखौ।
3. 'ओळबौ' कविता में कवि पन्ना धाय री बात क्यूं करै ?

लेखरूप पडूत्तर वाळा सवाल

1. कवि चंद्रप्रकाश देवल रै जीवण-परिचै अर सिरजण री साख रौ दाखला देयनै वरणाव करौ।
2. आपरी मायड़ भासा सारू कवि चंद्रप्रकाश देवल रै मन में कांई पीड़ है ? दाखलां समेत समझावौ।
3. 'भासा सूं अरदास' कविता रौ भाव आपरै सबदां में लिखौ।

नीचै दिरीज्या काव्यांसां री प्रसंगाऊ व्याख्या करौ।

1. जाणूं घणौ ई म्हैं
   व्है केई सबद
   अणूता ओगणगारा
   केई व्है वां सूं न्यारा

केई बादीला
केई नखराळा
केई खुरदरा
केई सुंवांळा
केई अणूता आकरा
हियौ तोड़ लै अैड़ा अंटाळा

2. उडीकतौ थारी दयावती
ऊभौ थारै कोळै
म्हारी भासा!
अेकर तौ रैवास कर
म्हारै ई अधवीठै अंतस
म्हैं पूरण व्है जावूं
मरयां मुगातर पावूं।

3. बोलूं तौ किण आसरै
बडाउवां भासा गुमाय दी।
लेहणौ छोडग्या व्हैता तौ थुड़तौ दिन-रात
बणती आफळ उतार देवतौ
मांदौ छोडग्या व्हैता
तौ ई टसक-टसक जीव लेवतौ
छोड जावता पांगळौ
तौ ठिरड़ आपरौ गात, हर जठै पूग जावतौ।
कांन देय साबूत, बोल गुमायगा
दीसता-दासता फूठरा नै दागल कैवायग्या।